https://printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

कावासाकी रोग

के संस्करण 2016

1. कावासाकी क्या है ?

1.1 यह क्या है ?

यह रोग पहली बार अंग्रेजी चकित्सा साहत्य में 1967 में एक जापानी बालरोग वशिषज्ञ द्वारा बाताया गया था (इस रोग का नाम उनके नाम पर रखा गया है)। उन्होंने बुखार, त्वचा पर लाल चकत्ते, लाल ऑखें, गले और मुँह की लाली, हाथों और पैरों में सूजनऔर गर्दन में बढ़े लम्फि नोड्स के साथ बच्चों के एक समूह की पहचान की। शुरु में इस रोग को म्यूकोक्युटेनयिस लम्फि नोड सड्रिोम कहा जाता था । कुछ साल बाद हृदय जटलिताओं जैसे कोरोनरी धमनयिों के एन्यूरज़िम (इन रक्त वाहकिाओं का फैलना) की जानकारी मलिी । कावासाकी रोग एक तीव्र प्रणालीगत वैस्कुलाइटसि है, जसिका अर्थ है कि शरीर की कसिी भी मध्यम धमनयिों मुख्य रूप से कोरोनरी धमनयिों में सूजन होती है और उनमें एन्यूरज्मिस बन सकते हैं। हालांकि अधकितर बच्चे सर्फि तीव्र लक्षण दखिाएंगे और दलि की कम्पलीकेशन्स नहीं होंगी।

1.2 यह कतिना आम है ?

केडी एक दुर्लभ बीमारी है। लेकनि बचपन की अन्य आम वेसकुलाइटसि की बीमारी जैसे कि हनिोकस्कोनलेन परप्युरा के समान आम बीमारी है। कावासाकी रोग को दुनयिा भर में वर्णन कयिा गया है । हालांकि यह बीमारी जापान में ज्यादा आम है। यह लगभग वशिष रूप से छोटे बच्चों की एक बीमारी है। इस बीमारी के लगभग 85% बच्चे 5 साल से कम की उम्र के होते हैं। 18-24 महीने की उम्र के बच्चों में यह सबसे ज्यादा आम है। 3महीने से कम और 5 साल से ज्यादा के बच्चों में यह बीमारी कम पाई जाती है । परन्तु इन बच्चों में कोरोनरी एन्यूरीज़म बनने का खतरा ज्यादा होता है। लड़कयिों की तुलना में लड़कों में अधकि आम है। हालांकि साल के कसिी भी समय में इस बीमारी के मामले पाए जा सकते हैं, पर कुछ मौसमी भी पाई जाती है । देर की सर्दयिों में और बसंत ऋतु में इनकी संख्या में वृद्धि होती है।

1.3 इस बीमारी के कारण क्या है ?

केडी के कारण अस्पष्ट है हालांकि संक्रामक उत्पत्ति एक ट्रिगर होने का संदेह है। अतिसंवेदनशीलता या संक्रामक एजेंट द्वारा शुरू की गई अव्यवस्थित प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया,एक सूजनप्रक्रिया शुरु कर सकती है ।

1.4 क्या यह विरासत में मिली है ? मेरे बच्चों को यह बीमारी क्यों है ? क्या इससे बचाया जा सकता है ? क्या यह संक्रामक है ?

केडी एक वंशानुगत बीमारी नहीं है, हालांकि एक अनुवंशिक गड़बड़ी का संदेह है। ऐसा बहुत दुर्लभ है कि एक ही घर में इस बीमारी से दो सदस्य ग्रसित हो। यह संक्रामक नहीं है। वर्तमान में, इस बीमारी से बचने का कोई तरीका नहीं है। एक बच्चे में इस बीमारी का दोबारा होना संभव है, परन्तु बहुत दुर्लभ है।

1.5 मुख्य लक्षण क्या है ?

बीमारी अस्पष्टीकृत तेज बुखार के साथ प्रस्तुत करता है। बच्चा आमतौर पर चिड़चिड़ा होता है। बुखार शुरु होने के साथ-साथ कुछ दिन बाद ऑखें लाल हो जाती हैं, परन्तु कोई मवाद या स्त्राव के बिना । बच्चे में विभिन्न प्रकार के त्वचा के चकते बन जाते हैं। जैसे कि खसरे या स्कारलेट फीवर की तरह, लाल रंग के दाने, पेप्यूल्स आदि। त्वचा के चकत्ते ज्यादातर ट्रंक और हाथ पैरों पर और डायपर क्षेत्र में होते हैं और यह त्वचा पर लालिमा ला सकता है या उसे छील सकता है।
मुंह में परिवर्तन जैसे चमकदार लाल फटे होंठ, जीभ लाल (आमतौर पर स्ट्राबेरी जीभ कहा जाता है) और ग्रसनी में लाली हो सकती है। हाथ और पैरों में लाली और सूजन आ सकती है। हाथों और पैरों की अंगुलियों में सूजन आ सकती है। इसके बाद त्वचा एक विशेष तरह से छिलना शुरु होती है, यह अंगुलियों की नोक से शुरु होती है (दूसरे से तीसरे हफ्ते में)। आधे से ज्यादा बच्चों में गर्दन का एक लिम्फ नोड बढ़ जाता है, ज्यादातर 1.5 सैं.मी. से ज्यादा और सिर्फ एक ही तरफ।
कभी-कभी अन्य लक्षण जैसे जोड़ों में दर्द या सूजन, पेट में दर्द, दस्त, चिड़चिड़ापन या सिरदर्द भी हो सकते हैं । जिन देशों में बी.सी.जी. का टीका दिया जाता है (जोकि टीबी की बीमारी से बचाता है), छोटे बच्चों में उस निशान क्षेत्र का लाल होना भी दिख सकता है। हृदय का शामिल होना इस बीमारी का सबसे गंभीर लक्षण है । इससे लंबी अवधि जटिलताओं की संभावना होती है । दिल में मरमर्स, ताल गड़बड़ी और अल्ट्रासाउण्ड असामान्यताएं हो सकती हैं। दिल की सभी परतों में थोड़ी सूजन आ जाती है। पेरिकार्डिटिस (हृदय की बाहरी झिल्लर की सूजन), मायोकार्डिटिस (हृदय की मांसपेशी की सूजन) और वाल्व भी शामिल हो सकती है। हालांकि इस बीमारी की मुख्य विशेषता कोरोनरी धमनियों में एन्यूरिज्म बनना है ।

1.6 क्या यह बीमारी सब बच्चों में एक जैसी होती है ?

रोग की गंभीरता हर बच्चे में अलग होती है । सारे लक्षण हर बच्चे में नहीं होते और हृदय का प्रभावित होना भी ज्यादातर रोगियों में नहीं होता है। जिन बच्चों को इलाज मिलता है, उनमें

100 में से लगभग 2 से 6 बच्चों में एन्यूरज़िम बनते हैं । कुछ बच्चों में (वशिेष रूप से 1 वर्ष से छोटे) यह बीमारी अधूरे रूप से आती है, जसिका अर्थ है कि उनमें बीमारी के सारे लक्षण नहीं दखिाई देते, जसिसे नदिान और अधकि कठनि हो जाता है । इनमें से कुछ बच्चों में एन्यूरज़िम भी बन जाते हैं । इन्हें असामान्य केडी का नदिान दयिा जाता है ।

1.7 क्या बच्चों में यह बीमारी बडों से कुछ अलग होती है ?

यह ज्यादातर बच्चों की बीमारी है , हालांकि वयस्कता में केडी की रपिोर्टस बहुत कम है।